Dr. Vandana Suman
Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

UG - SEMESTER - VI

MJC-11 : Contemporary Indian Philosophy

1 "S. Radhakrishnan"

Intellect and Intuition

राधाकृष्णन ने अपने ज्ञानशास्त्र में ज्ञान के विभिन्न सिद्धान्तों के बारे में अधिकतर आलोचनात्मक दृष्टिकोण से विचार किया है। ज्ञान के क्षेत्र में वे एक ऐसे सिद्धान्त की स्थापना करना चाहते हैं जिससे लोग चरमसत्ता को जान सकें। उनके अनुसार सत्य की ज्ञान की प्राप्ति के तीन उपाय हैं जिनमें से पहले दो की सहायता से परमसत्य का ज्ञान संभव नहीं है। सबसे अंतिम उपाय ही ऐसा है जिसके सहारे लोगों को प्रत्यक्ष रूप से परमसत्य की प्राप्ति हो सकती है। ज्ञान प्राप्ति के तीन साधन इस प्रकार हैं —

1. Sense experience – संवेदनात्मक अनुभूति
2. Intellectual Cognition – बौद्धिक ज्ञान
3. Intuitival Apprehension –

राधाकृष्णन के अनुसार ज्ञान प्रत्यक्षीकरण से शुरू होता है। संसार के विभिन्न वस्तुओं का ज्ञान हमें ज्ञानेन्द्रियों की सहायता से ही होता है। जब Sense organs का विभिन्न वस्तुओं से सान्निध्य होता है तभी हमें उन वस्तुओं का ज्ञान होता है। इसे ही sense-experience knowledge या इन्द्रिय प्रदत्त ज्ञान कहते हैं। इसकी सहायता से ही हम बाह्य जगत के चरित्र से परिचित होते हैं। इसलिए इसे प्राकृतिक ज्ञान का विषय-वस्तु कहा जाता है।

परन्तु केवल प्रत्यक्षीकरण और इन्द्रिय प्रदत्त ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है।

(किसी भी वस्तु को synthetic रूप से जानने के लिए हमें बुद्धि की सहायता लेनी होगी।) प्रत्यक्षीकरण से केवल हमें अलगावी पात वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त होता है। Reason या बुद्धि ही इन्द्रिय प्रदत्त ज्ञान में व्यवस्थित लाती है। तार्किक बुद्धि के द्वारा हमें आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार के ज्ञान की प्राप्ति होती है। किन्तु अप्रत्यक्ष रूप में इसकी प्राप्ति हमें विश्लेषण और संश्लेषण (Analysis and synthesis) द्वारा होता है और इसका चरित्र symbolic होता है।

परन्तु राधाकृष्णन का विचार है कि यद्यपि तार्किक बुद्धि का स्थान Perceptual Knowledge के ऊपर है, लेकिन फिर भी यह परमसत्य के ज्ञान की प्राप्ति के लिए पर्याप्त नहीं है। तार्किक बुद्धि की तुलना में हमारे अन्दर एक और ऊँचा ज्ञान निहित है जिसे Intuition कहते हैं। यह Immediate है तथा इसके ज्ञाता और ज्ञेय एक है। उनका कहना है कि "To Know reality here is to be reality." Intuition के द्वारा वस्तुओं को हम उसी रूप में देखते हैं जो वास्तविक है। हम उन्हें Unique Individual के रूप में देखते हैं। ये Non-sensuous हैं इनका आविर्भाव मस्तिष्क की क्रिया से सत्य के साथ होता है। Prof- Schilpp का कहना है कि - "It awareness of the truth by identity" राधाकृष्णन के विचार से यह पता चलता है कि इनके Intuitionism

में द्वैतवाद का स्थान है। हमारे लिए Communication शब्द बहुत कुटिल है, यद्यपि इतना स्पष्ट है कि इसमें द्वैतवाद का बोध होता है। राधाकृष्णन ने Intuition का व्यवहार दो रूपों में किया है। विभिन्न वस्तुओं की मात्रा के क्षेत्र में एक मूर्त वस्तु का जो हमें पूर्ण ज्ञान की अनुभूति होती है वह समाधि है। (Intimate complete knowledge) तथा दूसरा है consummatory tat metaphysical insight जिसमें अनुभूति की विभिन्नता विलीन हो जाती है और हमें एक का ज्ञान होता है।

राधाकृष्णन कहते हैं कि Intuition को Imagination के साथ मिलाना (Identing) नहीं चाहिए क्योंकि कल्पना में वस्तु का अस्तित्व नहीं होता वहीं अन्तः अनुभूति में वस्तु का अस्तित्व रहता है।

"The reality of the object is what distinguishes between intuition and imagination. हम knowledge शब्द ~~को~~ ~~[illegible]~~ को सूचनीय ~~[illegible]~~ शब्द तक ही सीमित नहीं रख सकते हैं। Certainty और Non-Communicability ज्ञान की परीक्षा के मापदण्ड हैं।

चूंकि intuition को इसकी क्षमता है, इसलिए यह ज्ञान की एक ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~ जाती है। अतः Intuition से जिसका हमें पता

FEB - 2017
M T W T F S S M T W T F S S
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12
13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26
27 28
JANUARY • THURSDAY 12
012-353 • WK 02

चलता है वह चेतना की तरह कोई अनधारणा नहीं है, यह गतिशीलता की एक अवस्था है उस वस्तु की अभिलाषा नहीं।

Intuitive Knowledge का सबसे यथोचित उदाहरण यह है कि यह प्रत्येक व्यक्तिगत आत्मा की आत्मनिश्चितता है। शंकराचार्य ने अपने ब्रह्म-सूत्र भाष्य में विवेचना से कहते हैं " सर्वोहि आत्मास्तित्वम प्रत्येतिना अहमस्मीति " (प्रत्येक Self को अपने अस्तित्व का ज्ञान प्राप्त रहता है। कोई यह नहीं कहता है कि हमारा अस्तित्व नहीं है।) बहुत से पाश्चात्य दार्शनिक जैसे - प्लेटो, डेकार्ट, Spinoza, Bradley और Bergson आदि Intuition को सत्य का प्रत्यक्ष और परम ज्ञान मानते हैं। प्राचीन भारतीय दार्शनिकों ने भी इसकी सत्ता को स्वीकार किया है। जैसे शंकराचार्य सभी देश और काल के रहस्यवादियों ने Intuitive Knowledge की संभावना को स्वीकार किया है।

राधाकृष्णन भी Intuitive Knowledge की सत्यता का अनुमोदन करते हैं। वे कहते हैं कि Intuitive Consciousness उस reality को प्राप्त करता है, जो हमारी इन्द्रियों द्वारा अप्राप्य है। राधाकृष्णन कहते हैं कि - " वह चेतना जिसके द्वारा हम सही और गलत से प्रत्यक्ष रूप से परिचित होते हैं और वह सौन्दर्यानुभूति जिसके द्वारा हम सुन्दर और असुन्दर से तत्क्षण परिचित होते हैं, वह Intuition के ही रूप हैं।

राधाकृष्णन के अनुसार Intuition शरीर में इतना ही शक्तिशाली

2017

है जिसकी आत्मा से इसकी उत्पत्ति होती है। यह कहता है कि संसार आध्यात्मिक व्यवस्था का रूप माना है यद्यपि इसके लिए हमारे पास स्पष्ट संगत तार्किक प्रमाण नहीं है। Intuition के द्वारा हम इस व्यवस्था से परिचित होते हैं जिसे Critical Intellence प्राप्त करना चाहता है।

ज्ञान होने यह देखना है कि Intuition Intellect से किस प्रकार संबंधित है यह बिलकुल स्पष्ट है कि Intuitive Knowledge Intellectual Knowledge से अधिक ऊँचा है। बौद्धिक ज्ञान में ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान विभाजित हैं इसलिए इसके द्वारा आत्म ज्ञान (Self realization) की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

आत्मज्ञान केवल Intuition के द्वारा ही संभव है। परंतु इसका यह अर्थ नहीं कि Intuition anti-intellectualism की ओर अग्रसर है जैसा कि कभी कभी गलत रूप से समझा जाता है। Intuition Intellect का प्रतिपक्षी भी नहीं है। बुद्धि से भी इसका कोई मतभेद नहीं है। यह केवल उसकी सीमाओं से परे अग्रसर होती है।

राधाकृष्णन कहते हैं कि Intuition और Intellect की निरन्तरता के बीच में कहीं कोई व्यवधान नहीं है। Intellect हमें Intuition की ओर बढ़ाते हैं और हमें उस

गहरी भांति (deepe partionality) की प्राप्ति होती है जिसको अनवरत ज्ञानानुभव है। Intuition जो Intellect की अवहेलना करता है, वह अंधा होता है।

Intuition यद्यपि Reason से परे है, किन्तु इसके विरुद्ध नहीं है। दोनों ही ज्ञान के स्रोत हैं Intellectual और Intuitive और दोनों का अपने अपने क्षेत्रों में महत्व है। तार्किक ज्ञान हमें विश्व की परिस्थिति को समझने में मदद करता है जिसमें हम रहते हैं और अपने स्वास्थ्य के लिए इसपर हमें नियंत्रण करने के योग्य बनाता है। अतः बिना उचित रूप से इसे जाने हम कोई भी कार्य अच्छी तरह नहीं कर सकते हैं। अतः Logical Knowledge बहुत अनिवार्य है। परंतु यदि हम वस्तुओं की Uniqueness (विलक्षणता) उनके अनश्वर सत्यता को जानना चाहते हैं, तब हमें तर्कमूलक विचार से परे जाना होगा। किसी वस्तु का प्रत्यक्ष ज्ञान और इसका स्थिर और सत्य अवलोकन ही Intuition है। यह कोई रहस्यात्मक प्रक्रिया नहीं है। यह बहुत ही सरल और तीक्ष्ण परीक्षा है जो प्रत्येक मानवीय मस्तिष्क के लिए संभव है।

Intuitive Knowledge अबौद्धिक नहीं है, यह केवल Non-Conceptual है। यह एक बौद्धिक Intuition है जिसमें Immediacy और Mediacy दोनों पाए जाते हैं। Intuition में हम गम्भीर रूप से सोचते हैं, ज्यादा गहरे रूप में अनुभव करते हैं तथा अधिक स्पष्ट रूप में

देखते हैं Intellect and Intuition दोनों आत्मा से संबंधित हैं। जहाँ कि बुद्धि एक विशिष्ट भाग से संबंधित है वहीं प्रज्ञा सम्पूर्ण आत्मा से संबंधित है। आत्मा में दोनों का समन्वय हो जाता है तथा दोनों की क्रियाएँ एक दूसरे पर निर्भर रहती हैं। Intuition द्वारा हमें object in itself की प्राप्ति होती है तथा Intellect के द्वारा हम उनके स्वरूप से परिचित होते हैं। राधाकृष्णन का कहना है कि प्रत्येक Intuition में बौद्धिक तत्त्व रहते हैं। इसे और अधिक बौद्धिक बनाकर हम इनके सार को और अधिक पुष्ट करते हैं।

इसप्रकार हम पाते हैं कि Intellect and Intuition दोनों में गहरा संबंध है। फिर भी राधाकृष्णन Intuition को Intellect से अधिक महत्त्व देते हैं। वे कहते हैं कि कला साहित्य और दर्शन के सभी बड़े कार्य Spirit से संबंधित हैं तथा Spirit Intuitive apprehension से सम्बन्धित है। नैतिकता के सभी प्रमुख कार्य तथा सभी बौद्धिक कार्यों की उत्पत्ति Spirit के सान्निध्य से हुई है। अतः ये सभी Intuition पर आधारित हैं।

राधाकृष्णन Intuition को Intellect integral whole मानते हैं और कहते हैं कि मस्तिष्क के विभिन्न पहलुओं की उत्पत्ति इसी में होती है, इसी में उनका विकास होता है और फिर इसी में वे विलीन हो जायेंगे। वे कहते हैं

कि सभी धर्म Intuition पर ही आधारित हैं तथा धार्मिक जीवन जिसका संचालन विभिन्न देवदूत साधु और महात्मा द्वारा होता है वे भावना, बुद्धि और इच्छा के समन्वयात्मक पूर्णता के द्वारा वे Intuition पर ही आधारित हैं। इसतरह हम कह सकते हैं कि — "Intuition is the inner eye of Intellect as Intellect is the Inner eye of mind and external experiences".